ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 11 अंक 9 | 7 से 13 जुलाई, 2016 | दयानन्दाब्द 192 | सृष्टि सम्वत् 1960853117 | सम्वत् 2073 | श्रा. शु. 02

वरिष्ठ साहित्यकार एवं वैदिक चिन्तक डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया जी की 75वीं वर्षगांठ के शुभअवसर पर

अमृत महोत्सव का आयोजन एवं अभिनन्दन ग्रन्थ का लोकार्पण सम्पन्न

वेद मनीषी श्री सुन्दरलाल कथूरिया आर्य समाज की शान हैं

– स्वामी आर्यवेश

हिन्दी साहित्य के देदीप्यमान नक्षत्र श्री सुन्दरलाल कथूरिया को बधाई

– डॉ. रमानाथ त्रिपाठी

डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया पर आर्य समाज को गर्व

– डॉ. अनिल आर्य

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. कथूरिया शतायु हों

– डॉ. शिव कुमार शास्त्री

प्रसिद्ध वैदिक चिन्तक एवं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया की 75वीं वर्षगांठ के शुभअवसर पर भव्य अमृत महोत्सव का आयोजन आर्य समाज बी–2 ब्लॉक जनकपुरी, नई दिल्ली में 1 जुलाई, 2016 को सायं 5 बजे से रात्रि 8 बजे तक आयोजित किया गया। इस अवसर पर आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के ब्रह्मत्व में एवं आचार्य योगेन्द्र शास्त्री के पौरोहित्य में आयुष्काम यज्ञ किया गया जिसमें डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया सपत्नीक एवं समस्त परिवारजनों के साथ सम्मिलित हुए। यज्ञ के उपरान्त समस्त विद्वानों एवं शुभाकांक्षियों ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, सभा के उपप्रधान डॉ. अनिल आर्य जी की उपस्थिति में यशस्वी जीवन तथा दीर्घायु के लिए आशीर्वाद दिया। यज्ञ के उपरान्त अमृतमहोत्सव आर्य समाज के विशाल सभागार में प्रारम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया जी के गुरु अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के रामकथा विशेषज्ञ डॉ. रमानाथ त्रिपाठी जी ने की। उनके अतिरिक्त आशीर्वाद के लिए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि मूर्धन्य साहित्यकार रामदरश मिश्र एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी–कानपुर, डॉ. राहुल, डॉ. शिवकुमार शास्त्री–अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य विद्वत्त परिषद्, डॉ. महावीर मीमांसक, डॉ. अनिल आर्य, डॉ. श्यामलाल डी.लिट् आदि मंच पर उपस्थित थे।

डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया जी की 75वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आशीर्वाद स्वरूप अपने उद्बोधन में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि जीवन के तीन चौथाई स्वर्णिम वर्ष तप, त्याग एवं परिश्रम से बिताकर अमृत महोत्सव मनाने वाले प्रसिद्ध वैदिक चिन्तक एवं लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया आर्य समाज की शान हैं। पूरा आर्य जगत उनके वैदुष्य, पांडित्य एवं प्रतिभा पर गर्व करता है। आज मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि मैं सम्पूर्ण आर्य जगत की ओर से उन्हें शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद प्रदान करने के लिए इस शुभअवसर पर उपस्थित हूँ। परमात्मा से प्रार्थना है कि डॉ. कथूरिया यजुर्वेद के 40वें अध्याय के दूसरे मंत्र **कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समां। एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्मे लिप्यते नरे।।2।।** के अनुसार पूर्ण स्वस्थ रहते हुए शतायु प्राप्त करें। मैं उनके यशस्वी एवं उज्ज्वल जीवन की कामना करता हूँ। डॉ. कथूरिया ने जहाँ हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की है, वहीं आर्य समाज के गिने–चुने विद्वानों में वे अपना स्थान रखते हैं। उनकी प्रतिष्ठा एवं यश से पूरा आर्य जगत गौरवान्वित है।

मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. रामदरश मिश्र ने मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया को अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि डॉ. कथूरिया सम्पूर्ण साहित्य जगत में एक नक्षत्र के समान चमकते सितारे हैं। वे न केवल एक विख्यात साहित्यकार ही हैं बल्कि वे संघर्षशील व्यक्तित्व के धनी भी हैं। वे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की विचारधारा से प्रभावित एवं प्रेरित हैं। उनके व्यक्तित्व में वैदिक चिन्तन एवं रस सिद्धान्त पर रचनात्मक दृष्टिकोण का सुन्दर समन्वय है। मैं उनकी आयु के 75 वर्ष पूर्ण होने पर हृदय से मंगल कामना करता हूँ कि वे दीर्घायु प्राप्त करें एवं साहित्य जगत में अपनी लेखनी एवं वाणी से जनमानस को प्रेरणा देते रहें।

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

आर्य समाज का प्रचार–प्रसार कैसे हो?

– वेद प्रकाश गुप्ता

आप सभी भी, यह स्वीकार करेगें कि महर्षि दयानंद जी के बाद, स्वामी श्रद्धानंद जी एंव महात्मा नारायण स्वामी जी के कार्यकाल के आस पास विश्व में सर्वाधिक आर्य समाजी रहे होगें। इसके पश्चात् आर्य समाजियों की संख्या निरतंर कम हो रही है जिसके कई कारण हैं। सभंवतः आर्य समाज ही ऐसा समाज है जिसमें कई आर्य समाजियों के बच्चे, वंशज यह कहते हुए अथवा लिखते हुए मिलेगें कि वह आर्य समाजी नही हैं बल्कि उनके पिता जी, दादा जी आदि आर्य समाजी हैं अथवा थे। ऐसा किसी अन्य धर्मियों के बच्चे नही कहते हैं। हम सभी को इन कारणों को सोच सोच कर संज्ञान लेना है कि ऐसा क्यों होता है कि केवल और केवल आर्य समाजियों के बच्चे ही ऐसा क्यों कहते हैं? हम सभी को ही इन सबका निराकरण करना है जिससे भविष्य में आर्य समाजियों के बच्चे भी ऐसा न कहने पायें तभी विघटन रुक सकेगा और आर्य समाजियों की संख्या बढ़ती ही जायेगी। हम प्रायः अनार्य और आर्य पत्र पत्रिकाओं में भी ऐसा पढ़ते हैं। इन सबके कई कारण हैं। इन सबका, एक कारण यह भी है कि अधिकांश आर्य परिवार अपने बच्चों को आधुनिक शिक्षा प्राप्त कराने के लिए गैर आर्य समाजी विद्यालयों में भेजते हैं जो ईसाइयों या पौराणिक मूर्तिपूजकों के होते हैं। अधिकांश आर्य समाजी अपने इन बच्चों से, आर्य समाज के नियमों, कर्मकांडों आदि के विषय मे संवाद आदि नही करते हैं, ऐसे में यह बच्चे इन विद्यालयों के वातावरण में, इन्ही विचारधारा के हो जाते हैं। आर्य समाज के समारोहों, कार्यक्रमों एंव कर्मकांडो में प्रायः अधिकांश आर्य समाजी, बच्चों को लाड़ प्यार के कारण सम्मिलित नही करते हैं और इन्हे आर्य समाज की सामान्य पुस्तकें तो छोड़ दीजिए, मुख्य पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश और आर्य समाज के दस नियम भी नही पढ़ाये जाते हैं यह सोच कर कि बड़ा हो जाने पर पढ़ा दिया जायेगा या स्वयं पढ़ लेगा। बच्चा आधुनिक शिक्षा के बस्ते एंव पढ़ाई के बोझतले, खेलकूद, टी वी आदि को छोड़ कर, स्वयं आर्य विचारधारा की पुस्तकों को कभी पढ़ ही नही सकता क्योंकि यह उन्हे नीरस एंव अनावश्यक लगता है। बच्चों से आर्य समाज की विशेषताओं आदि के बारे में वार्ता और चर्चाऐं भी नही की जाती हैं। ऐसे में यह बच्चे बड़े होकर आर्य समाज के नियमों, सिद्धातों, विशेषताओं से भिज्ञ नही होते हैं और यह गैर आर्य समाजी हो जाते हैं जिसके फलस्वरुप आर्यसमाज का विघटन होता जाता है। मुसलमानों में बच्चों से नमाज एंव कुरान अवश्य ही पढ़वाया जाता है। ईसाइयों एंव हिदूं मूर्ति पूजकों द्वारा बच्चों को मूर्ति पूजा आदि कर्मकांडो में अवश्य ही सम्मिलित किया जाता है जिससे इन सब के बच्चे बड़े होकर कट्टर हो जाते हैं।

आर्य समाज के निरतंर विघटन का दूसरा कारण, आर्य समाजियों के पुत्रों एंव पुत्रियों की शादियां प्रायः गैर आर्य समाजी परिवारों में होने के कारण, बहुएं पौराणिक घोर मूर्ति पूजक आदि ही होती हैं। उससे भी आर्य समाज की विशेषताओं आदि के बारे में वार्ता और चर्चायें नही की जाती हैं। पुत्रियां भी मूर्ति पूजक परिवारों मे जाकर मूर्तिपूजक हो जाती हैं। आस पास चारों ओर, टीवी कार्यक्रमों, सभी दैनिक समाचार पत्रों में मूर्ति पूजा का बढ़ चढ़ कर मंडन होता है। अतः अगली पीढ़ी कैसे आर्य समाजी रहेगी? इन्ही सब कारणों से आर्य समाजियों की संख्या निरतंर कम हो रही है। जिन आर्य परिवारों में ऐसा नही होता, वही परिवार आर्य समाजी बने रहते हैं। यह सब बातें विभिन्न आर्य पत्रिकाओं, अखबारों, टेलीविजन पर बालीवुड के कलाकारों एंव गणमान्य व्यक्तियों द्वारा कहते हुए, लिखते हुए, हम देखते व पढ़ते हैं कि मेरे अमुक पूर्वज जैसे पिता जी, दादा जी आदि आर्य समाजी थे। इसे आप अपने आस पास भी पायेगें।

इस विषय में मेरा सुझाव है कि, जब भी किसी आर्य समाजी परिवार के पुत्र का विवाह गैर आर्य समाजी परिवार की पुत्री से निर्धारित हो रहा हो तब, पुत्री यानी भावी वधू को एंव उसके परिवारवालों को वार्ता द्वारा बता दिया जाय कि विवाह के बाद, पुत्री को आर्य समाजी होना पड़ेगा। मूर्ति पूजा, फूलों का तोड़ना एंव सजावट में इसका उपयोग आदि वर्जित होगा। आर्य समाज के दस नियमों का पालन करना होगा। आर्य समाज की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश को अवश्य ही पढ़ना एंव चितंन, मनन करना होगा। यह भी कहा जाय कि पुत्री या कोई पारिवारिक जन अथवा कोई अन्य जन अपने धर्म के पक्ष में अथवा आर्य समाज के विपक्ष में वार्ता, परिचर्चा व तर्क करना चाहे तो उसका स्वागत होगा। तर्क परिचर्चा में जो सर्व सम्मत से पराजित हो तो वह विजयी पक्ष की बातों और धर्म को सहर्ष स्वीकार करेगा। इसी प्रकार की वार्तायें आर्य समाजी परिवार की पुत्रियों के विवाह के समय भी किया जाय जिससे पुत्रियां भी विवाह के बाद आर्य समाजी बनी रहें और अन्यों को आर्य समाज अपनाने को प्रेरित कर सकें। जो पुत्र अथवा पुत्री अथवा अन्य आर्यजन जो आर्य समाज के दस नियमों एंव सत्यार्थ प्रकाश से भली प्रकार से विज्ञ हैं तो उन्हे किसी भी धर्म वाला परास्त नही कर पायेगा बल्कि स्वयं निश्चित रुप से परास्त हो जायेगा। इन नियमों का पालन करना समस्त आर्य समाजियों के लिए भी अनिवार्य है अन्यथा वह भी ढोगीं आर्य समाजी एंव अनार्य ही होगें। यह लिखने के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ कि वर्तमान में कई आर्य समाजी एंव पदाधिकारी भी इन नियमों का अनुसरण नही करते हैं, जिसके कारण समारोहों आदि में अधिक साज सज्जा, दिखावा, फूलों की माला पहनना, पहनाना, फूलों पत्तियों से सजावट आदि का चलन हो रहा है। सादा जीवन उच्च विचार को छोड़ा जा रहा है। यह लिखना गलत नही होगा कि आर्य समाजियों की संख्या घटनें का कारण, इन दस नियमों की अवहेलना भी है। यदि कोई आर्य समाज की किसी बात अथवा कर्मकांड की प्रक्रिया आदि में त्रुटि इंगित करता एंव सुधार सुझाता है तो अधिकाशं आर्य समाजी, इन दस नियमों में नियम 4 एंव 5 की अवहेलना करते हुए, इसे संज्ञान में नही लेते, विचारते नही हैं, किसी भी कसौटी पर परीक्षण नही करते हैं बल्कि मूक बधिर हो जाते हैं चाहे, इससे अभी तक पुण्यमय कार्य के स्थान पर पापमय कर्मकांड हो रहा हो।

वर्तमान में कुछ प्रदेशों में विभिन्न कार्यक्रमों, तर्कों, सोशल मीडिया द्वारा प्रचार प्रसार से कुछ नवयुवक आर्य समाज से जुड़ रहे हैं जो कुछ हर्ष की बात है। अतः भविष्य में, आर्य समाज का विघटन न हो, के लिए यह आवश्यक है कि सभी आर्य समाजियों को अपने सभी पुत्र, पुत्रियों एंव समस्त परिवार के सदस्यों को आर्य समाज के दस नियम कंठस्थ कराना चाहिए एंव पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश चाहे 1– 2 पृष्ठ ही प्रतिदिन पढ़ना पढ़ाना चाहिए तथा इन नियमों पर समय समय पर चर्चा करते करते रहना चाहिए जिससे यह नियम और इनसे सम्बन्धित तार्किक तथ्य उनके मानस पटल पर गहराई तक समा सके जिससे सभी सदस्य एंव बच्चे आजीवन आर्य समाजी बने रहें और गैर आर्य समाजियों से आर्य समाज के पक्ष में चर्चा आदि कर सकें। उन्हें आर्य समाज के कर्मकांडो में अवश्य ही सम्मिलित किया जाये। उन्हे सत्यार्थ प्रकाश विशेषकर समुल्लास 1, 11, 3 एंव 7 पढ़वायें। यदि विद्यालयों के सामान्य दिनों में समय में कमी हो तो, विद्यालयों के अवकाश के दिनों में, इसे एंव अन्य पुस्तकें जैसे महर्षि दयानंद जी, महात्मा नारायण स्वामी एंव स्वामी श्रद्धानंद जी आदि की आत्म कथाएं अवश्य प्रतिदिन 1–2 घंटा पढ़ायें। आर्य समाज के समस्त विद्यालयों मय डी ए वी विद्यालयों, गुरुकुलों में आर्य समाज के दस नियम एंव सत्यार्थ प्रकाश विशेषकर समुल्लास 1, 11, 3 एंव 7 आदि को उनके पाठ्य क्रमों में अपरिहार्य रुप से सम्मिलित करना चाहिए। आर्य समाज के सभी भवनों, विद्यालयों के बाहरी व अंदर के चहरदिवालों, बैठक कक्षों आदि के मुख्य मुख्य स्थ्लों के ऐसे स्थानों पर आर्य समाज के दस नियम भली प्रकार पठनीय अक्षरों में लिखे हुए हों जिसे समस्त आगंतुक विशेषकर अन्य धर्मवाले जो मार्ग पर चलें, या इन स्थलों पर अथवा भवनों, कक्षों में आये तो इन्हे पढ़ कर आर्य समाज के सर्वकालिक, सर्वकल्याणकारक नियमों सिद्धातों से विदित हो सकें और सत्य असत्य का मनन कर आर्य समाज की ओर आकर्षित हो सकें। आर्य समाज के सभी पुस्तकों, पुस्तिकाओं, पत्रिकाओं के मुख पृष्ठ के पीछे तथा अंतिम पृष्ठ पर आर्य समाज के दस नियमों को अपरिहार्य रुप से छापना चाहिए जिससे यह आर्य समाजियों के भी ज्ञान में मनन एंव पालन करने हेतु बारंबार आते रहना चाहिए। जहाँ जहाँ आर्य समाज के यह नियम विशेष कर चहरदिवारों पर लिखे जायें, वहां पर एक नोट लिखा जाये, "इन उपरोक्त नियमों से, आप सहमत हों, तो आप केवल इन नियमों का अपने जीवन में पालन करें और अपने जीवन में आयी सुख शांति आदि लाभों का कुछ माहों के बाद स्वयं अवलोकन करें। क्योंकि सभी नियम आपके जीवन को सच्चाई, सुख शांति की ओर ले जाने वाले ही हैं तथा अन्य स्वजनों, परिचितों, परिवार के अन्य सदस्यों और साथियो को भी इन नियमों को जीवन में अपनाने को प्रेरित करें।" अन्य धर्म के लोग जो वेदों की वास्तिविकता नही जानते हैं वह लोग नियम 3 से संभवतः सहमत नही होगें। उनके लिए वेद मंत्रों के भावार्थ कैसे लिया जाय के लिए नोट लिखा जाय, "यह सर्व मान्य है कि विश्व में समस्त वेद ही प्राचीनतम पुस्तकें हैं। वेदों का ज्ञान ईश्वर द्वारा संस्कृत भाषा में दिया गया है जो किसी देश, स्थान, काल एंव किसी स्थानीय बोल चाल आदि की भाषा नही रही है। किसी भी देश, काल के लोगों को वेदों को पढ़ने सर्वकल्याणकारी भावार्थ समझने, जानने के लिए, एक जैसा परिश्रम करना है। वेदों का ज्ञान विज्ञान आदि समस्त प्राणी मात्र के लिये कल्याणकारी ज्ञान है अतः ऐसा ही वेद मंत्रों के भावार्थ लिए जायें तथा अन्यत्र हानिकारक, अवैज्ञानिक भावार्थ न लिए जायं। अनार्य विद्वानों द्वारा वेद मंत्रों का भावार्थ बहुत ही त्रुटिपूर्ण अर्थात अर्थ का अनर्थ लिया जाता है एंव लिखा जाता है जो विश्व मानव के हितों में नही हो सकता है अतः इन सब अर्थों, भावार्थों को अमान्य करना चाहिए। महर्षि दयानंद जी ने जिन जिन वेदों का भावार्थ लिखा है उसे ही ग्रहण करना चाहिए क्योंकि यह भावार्थ विज्ञान, प्रत्यक्ष प्रमाण, स्वयं अनुभव आदि समस्त कसौटियों पर सत्य एंव समस्त मानवों, सर्वदेशिये के लिए कल्याणकारी होते हैं यदि कहीं ऐसा नही पाया जाता है तो तदानुसार सुधार, बदलाव किया जा सकता है। वेदों में इतिहास, किस्से कहानी, कर्मकांडों की प्रक्रिया नही ही हो सकती है क्योंकि यह मानव जीवन के प्रारभं से ही है और ऐसा ही भावार्थ लेना समस्त मानव के हित में लाभदायक होगा। चाहें तो उपरोक्त नोट के साथ निम्न तथ्य भी, अथवा अलग से लिखा जाये, "जैसे आप विभिन्न सामग्रियों के क्रय करने में अच्छे से अच्छा सामग्री का चयन करते हैं, भोजन में व्यजंनो का चयन करते हैं, वस्त्रों में कपड़े की गुणवता, रगं आदि, व्याह में लड़के लड़की का चयन करते हैं, उसी प्रकार से विभिन्न धर्मों के मुख्य मुख्य सिद्धातों का तुलनात्मक अध्ययन कर जो धर्म अपने स्वय एंव परिवार, मुहल्ले, नगर, प्रातं, देश एंव विश्व के लिए सर्वाधिक लाभदायक, सुख, शातिंदायक हो उसे ही अपनाना चाहिए।" इन सभी धर्मों के सभी सिद्धान्तों, नियमों एंव विशेषताओं को सभी कसौटियों, मापदडों पर कसा जाना अर्थात परीक्षण किया जा सकता है। यह कसौटियाँ जैसे प्रथम– धर्म के आदेश, निर्देश समस्त मानव मात्र के कल्याणकारक हों, द्वितीय– विज्ञान के आधार पर, तृतीय – वास्तव में स्वयं एवं लोगों द्वारा अवलोकन, निरीक्षण, परीक्षणों के प्रत्यक्ष प्रमाण के आधारों पर एवं अन्य सुझाए गये कसौटियों पर जो जो सर्व कल्याण कारक अर्थात सत्य सत्य हो केवल उसी को अपनाना चाहिए। यदि अन्य कसौटियां संज्ञान में आये तो उनके अनुसार भी परीक्षण करना चाहिए। प्रचार प्रसार हेतु अन्य धर्मियों से वार्ता के समय हमें अपनी बात उन्ही की सरल सुगम स्पष्ट भाषा में आर्य समाज के नियम आदि का वर्णन करना चाहिए तथा आर्य समाज के नियम 4 से 10 के द्वारा उनके धर्म के लिए उनके अधंविश्वास को खत्म अथवा कम करके इन नियमों से ही सहमत कराया जाय जिसके पश्चात् नियम 1 से 3 तक सुगमता से सहमत कराया जा सकता है। अपने धर्म में अटूट अंधविश्वास के कारण, प्रारम्भ में ही वह वेद मंत्रों आदि के आधार पर कोई भी तथ्य, तर्क आदि ग्रहण करने को सहमत ही नही होगें।

कुछ लोग कहते हैं कि सभी धर्मों का सार एक ही है, परतुं उनके मान्य धर्म पुस्तकों के मुख्य मुख्य आदेश भिन्न होने से आपस में सर्वसम्मति नही बन सकी और कभी भी सर्वसम्मति नही बन सकती है। अतः उपरोक्त नियम किसी को किसी भी सिद्धातं से बांधते भी नही बल्कि आर्य समाज के दसवें नियम से, कि "सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रखने का सिद्धात है तथा प्रत्येक हितकारी नियम में सबको स्वतंत्र रखने का है" जो सर्वमान्य ही होगा।

आर्य समाज के विभिन्न बैठकों, समारोहों एंव शोभा यात्राओं में वेद मंत्रों आदि की व्याख्या आदि की चर्चा की जाती है परन्तु आर्य समाज के दस नियमों पर शायद ही कभी चर्चा होती हों। आर्य समाजियों के समूहों के लिए यह सर्वथा उचित है पर अन्य धर्मों समूहों आदि के बीच वेद मंत्रों आदि के प्रवचन उन्हें नीरस, अनुपयोगी एंव सहमति करने वाले नही लगेगें जबकि आर्य समाज के दस नियमों पर परिचर्चा आकर्षक, तथ्यपूर्ण, तर्कपूर्ण, सत्य, उचित एंव उनके धर्मों के सिद्धातों से तुलना करने पर उन्हे उनके धर्मों की कमियां एवं आर्य समाज की विशेषताए उजागर होगीं और वह आर्य समाज के नियमों से सहमत होने पर आर्य समाज का प्रचार प्रसार तेजी से हो सकेगा।

वर्तमान समय में बच्चों को कार्टून बहुत रोचक लगता है अतः बच्चों की रुचि के अनुसार आर्य समाज से संबधित कार्टून पुस्तकें, चलचित्र आदि बना कर उन्हे दिखाया जा सकता जिससे वह बचपन से ही आर्य समाज के नियमों आदि का ज्ञान तर्कों परिचर्चाओं आदि से भली भांति विज्ञ हों जिससे वह

शेष पृष्ठ 6 पर

आओ पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज का स्मृति दिवस 3, 4 व 5 अगस्त को मिलकर मनाएं

कर्म करते हुए जिन्होंने जां को निसार दिया
कल न कहे कोई कि हमने उन्हीं को विसार दिया
कर्म निष्काम का था जीवन में जिनके समाया
श्रीकृष्ण ने गीता में था जो बताया
न था कोई अपना न कोई था पराया
सभी के लिए प्यार हृदय में था समाया
आओ आज मिलकर उन्हें याद कर लें
नयन गगरियों को अपने अश्रवम्बू से भर लें।

प्रिय सज्जनों समय की धारा प्रबल वेग से बहती चली जा रही है। कब कितना समय गुजर गया किसी को पता भी नहीं चलता है। कल जो सुन्दर, स्वस्थ, सुडौल शरीर वाले लगते थे, काले घुंघराले बालों पर इतराते थे। मदमस्त, मतवाली चाल चला करते थे, आज ढीले ढाले चमड़ी वाले, झुकी कमर वाले वे ही शरीर झुर्रियों से व्याप्त है। बीमारियों के घर बन गए हैं। काले घुंघराले बालों के स्थान पर सफेद बालों ने व गंजेपन ने अधिकार जमा लिया है। जिस देह पर से नजरें नहीं हटा करती थीं, उसे आज कोई देखना भी नहीं चाहता। जो आज बदले रूप में नजर आते हैं, कल को वही नजरों से ओझल हो जाते हैं। यह काल क्रम है, समय का फेर है, सृष्टि का नियम है। महाभारत में आया

सर्वेक्षयान्ताः निचयाः पतनान्तासमुछृयाः
संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तम् च जीवितम्

संग्रह का अन्त नाश है, उन्नति का अंत पतन है, संयोग का अंत वियोग है, जीवन का अंत मरण है। संसार में जो आए वो चले गए। जो हैं वे जाएंगें। इस सत्य को कोई मिटा नहीं सकता। पूज्य स्वामी जी भी अपने कार्य कलापों को करते हुए गतवर्ष यानि 5 अगस्त 2015 को हमसे जुदा हो गए थे। साल बीतते पता भी नहीं चला। 5 अगस्त 2016 को उन्हें गए हुए पूरा एक साल हो जाएगा। उन्होंने अपना सारा का सारा जीवन ऋषि के द्वारा बताए वैदिक पथ पर चलते हुए बिता दिया। वैदिक विचारधारा का प्रचार प्रसार करते हुए, आर्य समाज की बलिर्वेदी पर अपने आप को आहूत कर दिया। दुर्गम पर्वतीय प्रदेश में शिक्षा के माध्यम से, चिकित्सा के माध्यम से, शिविरों व कैम्पों के माध्यम से, बड़े–बड़े दीर्घ सत्रीय यज्ञों के माध्यम से, बड़े–बड़े अनुष्ठानों के माध्यम से उन्होंने वैदिक विचारधारा के परचम को लहराया। प्रशंसकों ने उनकी प्रशंसा भी की, उनके कार्यों की भूरि–भूरि सराहना की। निन्दकों ने निन्दा भी की, अपशब्दों का प्रयोग भी किया। उन पर कीचड़ भी उछाला। इन सब की परवाह किए बिना वे अपने कार्यों को करते रहे। अतीत में निन्दा, चुगली, अपशब्दों को न सहन करते हुए। अपना अलग रास्ता बनाकर चलने वाले विद्वानों, मनीषियों की तरह इन्होंने वैदिक पथ का परित्याग कर अपना अलग रास्ता नहीं बनाया। ऋषि के मिशन के लिए जीवन समर्पित किया था। उसी के प्रति सर्वदा समर्पित रहे। उसी के लिए कार्य करते–करते अंत में जीवन को उसी मिशन के लिए न्यौछावर कर चले गए। उनका स्मृतिस्थल, उनकी तपस्थली, उनकी कर्मस्थली दयानन्द मठ चम्बा आज उनके वियोग में मायूस है, उदास है। इस मायूसी को, इस उदासी को, पूज्य स्वामी जी के कार्यों को आगे बढ़ाकर आओ हम सब मिलकर दूर करें। जाने वाले तो अपने उस रूप में पुनः आते नहीं। सत्य युग में मान्धाता जैसे बड़े प्रतापी राजा हुए जो कि उस युग के अलंकार रूप थे, उस युग की शोभा थे, वे चले गए। अथाह समुद्र में जिसने पुल बांध दिया, दशानन का अंत करने वाला मर्यादा पुरुषोतम राम आज कहां है? अन्य युधिष्ठिर, भरत, नहुश आदि प्रतापी राजा भी कहानियों के विषय बनकर रह गए। इतिहास के पन्नों पर अंकित होकर रह गए हैं।

संयोगाविप्रयोगान्ता जातानाम् प्राणिनाम् ध्रुवम्
वुद्धवुदाइवतोयेषुभवन्ति न भवन्ति च

संसार में उत्पन्न प्राणियों के संयोग का अंत जुदाई है अर्थात जो प्राणि पैदा हुए है, जिन प्राणियों का किसी न किसी रूप में आपस में संयोग हुआ है, मेल हुआ है, वे नष्ट होंगें। उनका वियोग होगा। उनकी जुदाई अवश्य होगी यह ध्रुव सत्य है। कैसे– जैसे जल में बुलबुले बनते है, आपस में मिलते हैं, और नष्ट हो जाते हैं वैसे ही संसार में हम सब का उत्पन्न होना, मिलना व बिछुड़ना होना होता है।

अतः पूज्य स्वामी जी ने तो इस उदासी को आकर दूर नहीं करना है। अब पूर्व के उत्तरजीवियों की तरह हम लोगों ने ही उस उदासी को दूर करना है। इसलिए पूज्य स्वामी जी की पुण्यतिथि को यज्ञ, सत्संग व ऋषि लंगर के द्वारा स्मृति दिवस के रूप में मनाने का कार्यक्रम बनाया है। 3, 4 व 5 अगस्त इन तीन दिनों में पूज्य स्वामी जी के कृतित्व व व्यक्तित्व पर चिंतन करेंगें, मनन करेंगें और अपने जीवन में भी श्रेष्ठ कर्मों को करने का संकल्प लेंगें।

युवैव धर्मशील स्याद् अनित्यम् खलुजीवितम्
कृते धर्मे भवेत् कीर्तिः इह प्रेत्य च वै सुखम्

जो लोग सोचते हैं अभी युवावस्था है। यह समय सांसारिक भोगों को भोगने का समय है, भोगों को भोग ले। जब उत्तरावस्था आएगी, वृद्धावस्था आएगी, तब धर्म कर्म कर लेंगें। ईश्वर का भजन कर लेंगे। पर नहीं, जीवन

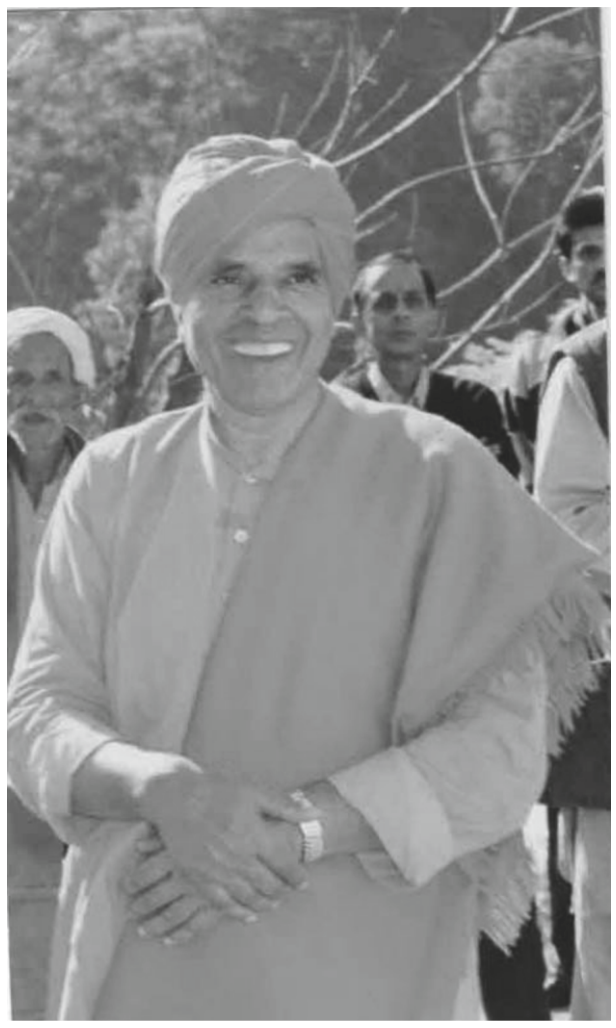

का क्या भरोसा कब साथ छोड़ जाए। गीतकार की गीत पंक्तियां हैं:–

श्वासों का क्या भरोसा आए या न आए
जो कर्म नित्य करता प्रभु न उसे भुलाए।

इसलिए युवावस्था में ही धर्म, कर्म कर लेने चाहिए। न जाने कब जीवन की सांझ हो जाए।

यह शमां गुजर न जाए कहीं हाथ मलते– मलते
कहीं बन्द न हो जाए यह श्वास चलते–चलते।

किसके जीवन की सांझ कब आ जाए किसी को पता नहीं। जाने को बच्चे भी चले जाते हैं। युवा को भी असामायिक मौत आ जाती है। चाहते हुए भी वृद्ध को मौत नहीं आती। हम सभी संसार रूपी बगीचे के फूल हैं। कौन फूल कब मुरझा कर गिर जाए यह उस माली को ही खबर है। अतः प्रिय बंधुओं आओ जब तक शरीर स्वस्थ है, जब तक श्वासों की लतिका चल रही है। चाहे हम बूढ़े हैं, जवान हैं, किशोर हैं जितना हो सके पुण्य कर्मों को कर लें, श्रेष्ठ कर्मों को कर लें। धर्मकर्मों को करने से मनुष्य की कीर्ति होती है, उसे यश प्राप्त होता है। इस लोक में भी सुख मिलता है और परलोक में भी अपार सुख प्राप्त होता है। प्रिय बंधुओ शास्त्रों में यज्ञ, सत्संग व दान का बहुत बड़ा महत्व बताया गया है, इन्हें श्रेष्ठ कर्म कहा गया है। आओ हम लोग इन पवित्र कर्मों को मिलकर करें। वेद भगवान भी कहते हैं– **सहस्त्रं साकमर्चत** अर्थात हजारों हजारों लोग मिलकर अर्चना करो, पुण्य कर्मों का सम्पादन करो महान फल प्राप्त होगा। और यह भी उस पवित्र आत्मा के स्मृति दिवस पर, जिनका जीवन ही यज्ञमय था, परोपकार का चलता फिरता रूप था। उस पुण्यात्मा, उस पवित्रात्मा, उस यज्ञपुरूष, उस तपोमूर्ति के स्मृति दिवस पर इनकी श्रेष्ठता को और बढ़ाए। इनकी पवित्रता को और पवित्र बनाएं। प्रिय बंधुओं उस दिव्यात्मा की इस स्मृति दिवस को आओ सब मिलकर भव्य रूप से मनाएं। इस अवसर पर प्रभूत रूप से अग्नि देव को घृत से अभिसिंचित कर यज्ञ करें। उत्तम प्रकार की हव्यों के द्वारा देवों को तृप्त करें। यज्ञ से उपजाऊ भूमि के समान बने हृदय भूमि पर भजनिकों, उपदेशकों के द्वारा दिए जा रहे सुविचारों के बीज को बीज लें, जिससे उस महापुरूष, उस युग प्रर्वतक के प्रति जहां हम अपनी कृतज्ञता व्यक्त करेंगें वहीं हमारा परम कल्याण भी होगा। यूं तो लोग अपने घरों में नित्य स्नान करते हैं, शरीर के मैल को धोते हैं, फिर भी अवसर प्राप्त होने पर तीर्थ स्थलों में भी डुबकी लगाने जाते हैं। मन की शान्ति के लिए जाते हैं, और वह शान्ति उन्हें वहां पर मिलती है, क्योंकि उन स्थानों पर कभी साधकों ने साधना की थी, तपस्वियों ने कठोर तप किए थे। याजकों ने बड़े–बड़े यज्ञों का अनुष्ठान वहां पर किया था, जिसके कारण वहां का वातावरण आज भी शान्ति का अभिसंचार करने वाला है। वहां का माहौल मनुष्य को कुछ क्षणों के लिए सांसारिक झमेलों को भुला देने वाला होता है। वह बात अलग है कि आज इस दिशा में उन स्थानों पर वह प्रयास नहीं हो रहे हैं, फिर भी पूर्वकाल का प्रभाव अब भी वहां अमिट है।

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नही हमारी।
सदियो रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा।।

उन स्थानों पर आज भी पाप, पाखंड होने के बावजूद भी, झूठे व फरेबी लोगों के जमघट होने के बाद भी, वह प्रभाव बरकरार है। प्रिय बन्धुओं मैं मानता हूं कि आप लोग अपने–अपने घरों में इन कर्मों को करते हो, और हमेशा करते रहो यह मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं। इससे भरपूर सुख–सौभाग्य आप लोगों को प्राप्त होगा। पर साल छः महीने में जब भी उन महान तपस्वी की इस तपस्थली में इस प्रकार के आयोजन होते हैं, तो अवश्य भाग लेने का प्रयास करें, विशेष लाभ होगा। जब भी ज्ञान गंगा प्रवाहित होती है, डुबकी लगाने अवश्य आया करो, अंजाने में किए पाप धुल जाएंगे। भाव–विभोर होकर अग्नि में आहुतियां देते–देते परम शान्ति को प्राप्त करोगे, क्योंकि उस तपस्वी के तप के, उस कर्मयोगी के निष्काम कर्म के, उस यज्ञपुरुष के लम्बे व दीर्घसत्रीय यज्ञों के बीज–अणुओं व परमाणुओं के रूप में यहां व्याप्त हैं, यह भी तीर्थस्थली है। इन कार्यक्रमों मे आयें ही आयें। इससे इत्तर भी जब समय मिले यहां आएं। यहां आप लोगों के रहने की उत्तम व्यवस्था है। खाने–पीने की व्यवस्था के लिए हमारा परिवार आप लोगों की सेवा के लिए उपस्थित है, और यज्ञ कर्म यहां का मुख्य आकर्षण है। वह निशदिन होता रहता है। पर्यटक पर्यटन के लिए इधर–उधर जाते रहते है। आर्य परिवारों के लोग पर्यटन के लिए भी यदि इधर आऐ तो मठ में ही ठहरें दोहरा लाभ मिलेगा। आम के आम गुठली के दाम, एक पन्थ दो काज हो जाएंगें। पर्यटन भी हो जाएगा, यज्ञादिकर्मों में शामिल होकर एक अनुपम शान्ति को भी प्राप्त कर लेंगें। ईश्वर सबका कल्याण करे।

करते हुए शुभ कर्मों को, मिलकर यज्ञ रचाऐंगे।
संसार को सारे न सही, इस भूभाग को स्वर्ग बनाऐंगे।।
तपस्थली उस तपस्वी की, कर्मस्थली भी है यह।
करना पूरा उन कार्यों को, छोड़ बीच में गए जो वह।।
स्वप्न था उस तपस्वी का, मठ को तीर्थ बनाना है।
पुण्यकर्मों का बीज बीजकर, सुख शान्ति के वृक्षों से सजाना है।।
आओ हम सब मिलकर उस स्वप्न को साकार करें।
पूत पवित्र सुरभि वाले इस नन्दन वन में विहार करें।।

– आचार्य महावीर सिंह

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आयोजित 35वां आर्य कार्यकर्ता कैप्सूल शिविर सम्पन्न

प्रमुख कार्यकर्ताओं, व्यायाम शिक्षकों तथा पदाधिकारियों ने

वैदिक सिद्धान्त, वक्तृत्व कला एवं अष्टांग योग का लिया क्रियात्मक प्रशिक्षण

गत 1981 में युवाओं के प्रेरणा स्रोत त्यागी, तपस्वी संन्यासी पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के द्वारा प्रारम्भ किये गये आर्य कार्यकर्ता कैप्सूल शिविर के अभिनव कार्यक्रम को निरन्तर 35 साल तक प्रतिवर्ष आयोजित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने परिषद् के समस्त प्रमुख कार्यकर्ताओं, व्यायाम शिक्षकों तथा पदाधिकारियों को वैदिक सिद्धान्त, भाषण कला एवं अष्टांग योग के क्रियात्मक प्रशिक्षण के लिए 23 जून से 29 जून, 2016 तक नैनीताल (उत्तराखण्ड) में 35वाँ आर्य कार्यकर्ता कैप्सूल शिविर आयोजित करके स्वामी इन्द्रवेश जी के व्रत को आगे बढ़ाया। शिविर में प्रातः 4 बजे से रात्रि 10 बजे तक शिविरार्थियों की दिनचर्या अत्यधिक व्यस्त रहती थी। प्रातः एवं सायं एक–एक घण्टे का ध्यान एवं साधना का कार्यक्रम सर्वाधिक आकर्षक रहा। शिविर में जहाँ वैदिक सिद्धान्तों की विवेचना की गई वहीं भाषण कला का ठोस प्रशिक्षण भी दिया गया।

सामाजिक जीवन में अध्यात्म को सम्बल बनाकर कार्य करने की प्रेरणा विश्व विख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने निरन्तर 5 दिन रहकर कार्यकर्ताओं को दी। उन्होंने जीवन के सभी क्षेत्रों में यथा धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि कार्यों में आध्यात्मिकता को आधार बनाकर कार्य करने की अतीव सुन्दर व्याख्या प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि जब तक राजनैतिक एवं प्रशासनिक, धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में एक ईश्वर एवं उसकी रचना में समताभाव को प्रमुखता नहीं दी जायेगी तब तक मनुष्यकृत व्यवस्था में असमानता चाहे वह जन्म के आधार पर स्त्री–पुरुष, काला–गोरा, गरीब–अमीर, ऊँची जाति–नीची जाति के आधार पर चल रही व्यवस्था दूर नहीं हो सकेगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि ईश्वर द्वारा प्रदत्त समानता के सिद्धान्त को समाज में लागू करना एवं असमानता को मिटाने के प्रयत्न करना ही ईश्वर उपासना एवं ईश्वरीय व्यवस्था का सम्मान करना होगा। शिविर के दौरान स्वामी आर्यवेश जी, श्री बिरजानन्द जी, आचार्य यशोवर्धन जी, बहन पूनम आर्या आदि विद्वानों के विभिन्न विषयों पर व्याख्यान होते रहे। पहाड़ की यात्रा, रस्सी पर नदी पार करने की कला, दैनिक यज्ञ एवं रात्रि में भजनों, गीतों एवं अन्ताक्षरी के द्वारा मनोरंजन के कार्यक्रम अत्यधिक आकर्षक रहे।

शिविर के समापन पर सभी शिविरार्थियों ने अगले एक वर्ष तक युवा निर्माण अभियान में निष्ठा के साथ कार्य करने का संकल्प लिया। ब्र. सोनू कुमार आर्य–ग्राम खटकड़, जिला–जीन्द हरियाणा एवं श्रीपाल आर्य ग्राम–खेड़ी पट्टी, जिला–मुजफ्फरनगर, उ. प्र. ने आजीवन आर्य समाज का कार्य करने का व्रत लिया। 29 जून को शिविर अत्यन्त उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ।

भौरां कलां, मुजफ्फरनगर में 5 दिवसीय शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् द्वारा पांच दिवसीय युवा निर्माण शिविर ग्राम–भौरां कलां, मुजफ्फरनगर, उ. प्र. में 17 से 21 मई, 2016 तक आयोजित किया गया।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय व्यायामाचार्य ब्र. सहसरपाल आर्य के संयोजन में आयोजित इस शिविर मे लगभग 200 युवाओं ने भाग लिया। शिविर के समापन अवसर पर आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता के रूप में पहुंचे। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, आचार्य यशोवर्धन मेरठ ने भी इस अवसर पर युवाओं का मार्गदर्शन किया।

स्वामी आर्यवेश जी ने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि आज युवाओं को अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए। देश का भार युवाओं के उपर आना है। युवाओं को

भौरा कलाँ में स्वामी आर्यवेश जी का स्वागत करते हुवे आर्यजन

युवा निर्माण शिविर भौरा कलाँ

संस्कारित करने व उनमें राष्ट्रप्रेम की भावना, नैतिकता, अनुशासन आदि नैतिक मूल्यों के बीजारोपण के लिए यह शिविर आयोजित किया गया है।

स्वामी जी ने ब्र. सहसरपाल जी को बधाई देते हुए निरन्तर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। ग्रामीणों की ओर से स्वामी जी सहित सभी अतिथियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में प्रशिक्षण गुलाब सिंह आर्य, सोनू आर्य, सुधीर आर्य, गंगाशरण आर्य, बबिता आर्या आदि ने किया।

कार्यक्रम में भौरां कलां के अतिरिक्त आस–पास के गांवों के बुजुर्ग भी उपस्थित रहे। गांव में आर्य युवक परिषद् का गठन भी किया गया। जिसका अध्यक्ष बंटी आर्य को बनाया गया।

पृष्ठ–1 का शेष

वरिष्ठ साहित्यकार एवं वैदिक चिन्तक डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया जी का अमृत महोत्सव

डॉ. अनिल आर्य ने डॉ. कथूरिया जी को आर्य समाज के महान चिन्तक एवं मनीषी की संज्ञा देते हुए कहा कि आर्य समाज को ऐसे विद्वान पर गर्व अनुभव होता है। उन्होंने डॉ. कथूरिया के शतायु होने की कामना की।

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. शिवकुमार शास्त्री जी ने भी डॉ. कथूरिया के दीर्घायुष्य की कामना करते हुए उनकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

आर्य समाज बी–ब्लॉक के प्रधान श्री कृष्ण बवेजा जी ने भी आर्य समाज की ओर से कथूरिया जी को हार्दिक शुभकामनाएँ दी। उनके अतिरिक्त आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, डॉ. मीना ठाकुर, डॉ. राहुल, श्री विजय गुप्त, श्री अर्जुन कुमार अरोड़ा, श्री दिनेश चन्द्र त्यागी आदि ने डॉ. कथूरिया के जीवन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला। इससे पूर्व श्री धन सिंह खोबा (सुधाकर) एवं श्रीमती राजमेहन ने सरस्वती बन्दना की।

कार्यक्रम के अध्यक्ष अन्तर्राष्ट्रीय रामकथा विशेषज्ञ रमानाथ त्रिपाठी जी ने भावविभोर होकर कहा कि उनकी आयु एवं स्वास्थ्य इस लायक नहीं था कि वे इस कार्यक्रम में सम्मिलित हो पाते। उन्होंने प्रसंगवश बताया कि पिछले सप्ताह प्रधानमंत्री निवास पर आयोजित साहित्यकारों के विशेष कार्यक्रम में मुझे विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था लेकिन मैंने उन्हें असमर्थता प्रकट करते हुए जाने से मना कर दिया। इसी प्रकार एक अन्य कार्यक्रम में भी आयोजकों द्वारा आग्रह किया गया कि मैं उनके कार्यक्रम में अवश्य पहुँचूं लेकिन मैंने उन्हें भी मना कर दिया। उन्होंने कहा कि मैं नहीं समझ पाया कि डॉ. कथूरिया के अमृत महोत्सव में मैं कैसे पहुँच गया और वह भी इतने लम्बे समय के लिए। मैं 92 वर्ष का हो चुका हूँ और मेरा स्वास्थ्य अब इजाजत नहीं देता कि मैं ऐसे आयोजनों में लम्बे समय तक बैठा रहूँ। लेकिन मेरे लिए यह स्वयं आश्चर्य का विषय है कि मैं किस आकर्षण के कारण इस कार्यक्रम में आ गया। निःसंदेह इसके पीछे डॉ. कथूरिया के व्यक्तित्व और 52 वर्ष पहले जब ये मेरे शिष्य बनें और मैंने इनको पढ़ाया, तब से लेकर अब तक इनका व्यवहार, इनकी प्रतिभा, इनकी सोच, इनकी नेक नियत और इनकी साहित्य में प्रतिष्ठा की अमिट छाप मेरे हृदय पटल पर अंकित है। इस अवसर पर मैं यह कामना करता हूँ कि डॉ. कथूरिया अपने जीवन का 100वां वर्ष भी इतने ही उत्साह एवं उमंग के साथ मनायें। लेकिन उस कार्यक्रम को सम्भवतः मैं नहीं देख पाऊँगा। इस प्रकार अपने भावुकतापूर्ण विचारों एवं संस्मरणों के द्वारा डॉ. त्रिपाठी ने अपना अध्यक्षीय भाषण देकर डॉ. कथूरिया जी को आशीर्वाद प्रदान किया।

इस पूरे महोत्सव का संयोजन डॉ. कथूरिया के अभिन्न मित्र एवं प्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. वीरेन्द्र अग्रवाल जी ने किया और उन्होंने बीच–बीच में अनेक रोचक संस्मरण डॉ. कथूरिया जी के सम्बन्ध में सुनाये। इस अवसर पर डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया जी के सम्मान में सैकड़ों महानुभावों ने शॉल, श्रीफल, स्मृति चिन्ह एवं फूल मालाओं से भेंटे देकर उनका अभिनन्दन किया। इस अवसर पर 'साहित्य एवं समाज शास्त्रीय बोधः विविध आयाम' शीर्षक से अभिनन्दन ग्रन्थ का लोकार्पण सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, डॉ. रमानाथ त्रिपाठी, डॉ. रामदरश मिश्र एवं अन्य विद्वानों ने किया। अभिनन्दन ग्रन्थ में जहां डॉ. कथूरिया के जीवन वृत्त का विवरण है वहीं हिन्दी साहित्य पर संग्रहणीय लेख एवं पठनीय सामग्री सम्मिलित है। इस अभिनन्दन ग्रन्थ का सम्पादन भी वयोवृद्ध साहित्यकार डॉ. रमानाथ त्रिपाठी ने किया है एवं अक्षय प्रकाशन के अध्यक्ष श्री हरीशचन्द्र जी ने इसको प्रकाशित कर उपलब्ध कराया है। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में साहित्यकार, कवि, समाजसेवी, पत्रकार आदि मौजूद थे। डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया ने समस्त विशिष्ट अतिथियों एवं अन्य महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित कर सभी को प्रीति भोज के लिए आमंत्रित किया। कार्यक्रम बड़ा ही प्रभावशाली एवं शानदार रहा और सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

ब्रह्माकुमारी मत संस्कृति व धर्म का विनाशक

– आचार्या डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा

यह ब्रह्माण्ड बड़ा विशाल है। इस विशाल ब्रह्माण्ड का शासक, प्रशासक, प्रकाशक, रक्षक, धारक, पालक, अविनाशक, संहारक आदि गुण, कर्म, स्वभाव वाला शिव (कल्याणकारक) ब्रह्मा, ओ३म् ईश्वर है। यह ब्रह्माण्ड का स्वामी सर्व मंगलकारक, सुखदायक ईश्वर हस्त, पाद, शिर, नयन, कर्ण, नासिका, मुख आदि आकारों वाला एवं पिण्डरूप नहीं है। वह तो ओ३म् पद्वाच्य सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, निराकार, अजर, अमर, चेतन शिव = सुखदायक, शंकर=सुखकारक, आदि स्वरूपमय है। यह वेद एवं वेदानुकूल शास्त्रों से सुप्रमाणित है। वेदादि शास्त्रों द्वारा सुप्रमाणित ईश्वर के इस स्वरूप को ही ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त ऋषियों ने जाना और माना है। आर्य समाज के संस्थापक वेदभाष्यकार महर्षि दयानन्द ने भी ब्रह्मादि ऋषियों का ही अनुगमन किया है।

पर वेदादि शास्त्रों द्वारा सुप्रमाणित ईश्वर के इस सर्वव्यापक, शंकर=सुखकारक आदि स्वरूपों से बहुत से मतवादी सहमत नहीं हैं उन असहमत मतवादियों में एक ब्रह्माकुमारी मत भी हैं। ब्रह्माकुमारी मत ईश्वर को सर्वव्यापी नहीं मानता, शंकर ईश्वर का ही विशेषण या नाम है, यह भी नहीं मानता। इस मत की बड़ी विचित्र धोखा देने वाली अवधारणाएँ हैं। मेरे समक्ष इस मत की 'शिव और शिवरात्रि, घोरकलहयुग विनाश' पुस्तक एवं 'ओम शान्ति मीडिया' समाचार पत्र सामने रखे हैं जिनमें इनकी शिव ईश्वर सम्बन्धी अवधारणाएँ लिखी हुई हैं। यह मत वेदोक्त संस्कृति व धर्म का नाशक एवं तथाकथित हिन्दू धर्म की नींव खोदने वाला मत है। 'घोरकलहयुग विनाश' पुस्तक के 12वें पृष्ठ पर हिन्दू मतावलम्बियों को बुतपरस्त हिन्दू ऐसा सम्बोधन कर उन्हें धिक्कारा है। इस मत के आदि आरम्भक सिन्ध, करांची वासी लेखराज हैं। जिन्हें ब्रह्माकुमारी मत शिव का अवतार मानता है। लेखराज के अनुयायी रामायण को श्रीराम का जीवन चरित्र एवं गीता को कृष्ण का उपेदश नहीं मानते, अपितु रामायण को उपन्यास एवं गीता को लेखराज का उपदेश मानते हैं। उनके अनुसार शिव यहुदियों का यहोवा है एवं मुहम्मद का अल्लाह शिव है। शिव और शिवरात्रि पुस्तक के 36वें पृष्ठ पर पंक्ति है – 'परमात्मा के शिव नाम का ही एक रूपान्तर यहोवा है।' और वह सर्वव्यापक नहीं है। इसी प्रकार पृष्ठ 42 पर पंक्ति है – 'मुहम्मद साहब ने शिव को ही अल्लाह नाम दिया था। हाँ! वे मूर्तिपूजा के विरुद्ध थे।' इन पंक्तियों से सुस्पष्ट है कि यह ब्रह्माकुमारी मत इसाई, मुसलमानों का छद्मवेशी मत है।

ईश्वर को सर्वव्यापक मानने पर इन्हें जो बाधा लगती है, वह शिव और शिवरात्रि एवं ओम शांति मीडिया के अनुसार यह है कि यदि कल्याणकारी शिव ईश्वर को सर्वव्यापक मानेंगे तो सर्वव्यापक तत्व का कहीं जाना नहीं हो सकता, अतः उसे मन के समान तीव्र गतिवाला भी नहीं कहा जा सकता। शिव को शंकर न मानने में इनका कथन है – शिव देवों के देव हैं और शंकर पुरी के निवासी एक देवता की मूर्ति है, शंकर शिव का पर्याय शब्द नहीं है। इस प्रकार लेखराज द्वारा चलाये गये इस मत की अनेक वेद एवं भारतीय संस्कृति के विरुद्ध मान्यताएँ हैं।

इस ब्रह्माकुमारी मत को ज्ञात हो कि ईश्वर के स्वरूप, कार्य आदि के ज्ञान में वेद एवं वेदानुकूल शास्त्र ही प्रमाणभूत हैं, अज्ञानी नहीं। अज्ञानी मतवादियों के कथन न प्रमाण योग्य होते हैं, न मानने योग्य! वेदादि शास्त्रों में ईश्वर की सर्वव्यापकता के प्रतिपादक अनेकों वेदमंत्र आते हैं। शिवपुराण आदि अन्य ग्रन्थों में भी ईश्वर को सर्वव्यापक बताया है। उदाहरण स्वरूप वेद एवं उपनिषद् के इन प्रमाणों से सुस्पष्ट है कि परमपिता परमात्मा ईश्वर सर्वव्यापक है। उसके सर्वव्यापक होने पर ईश्वर को कहीं आने–जाने की आवश्यकता नहीं, वह तो सर्वव्यापक होने से स्वतः ही सर्वगत है, सर्वत्र ही पहुंचा हुआ है। वह मन के समान क्यों? मन से भी तीव्र गतिवाला है। ईश्वर की मन से भी शीघ्र गति का निर्देश करते हुए वेद में कहा है –

अनेजदेकं मनसा जवीया नैनद्देवाऽआप्नुवन्पूर्वमर्षत्।

अर्थात एकम्=अद्वितीय ईश्वर, अनेजत्=गति नहीं करता, वह अचल है, परन्तु मनसः= मन के वेग से भी, जवीयः=अति वेगवान है। और वह, पूर्वम् अर्षत्= पहले से ही सबसे देव ईश्वर को, न आप्नुवन् = प्राप्त नहीं करती।

तात्पर्य हुआ, ईश्वर सर्वव्यापक है, मन की गति से भी तीव्र गतिवाला है, अचल है, अवतार एवं आने जाने की विधियों से रहित है। सम्पूर्ण जगत् में ठसाठस भरा है। उससे जगत् के तीनों लोकों का कण–कण व्याप्त है। व्याप्त होकर के सृष्टि के पालन, धारण, उत्पादन कर रहा है। सुख समृद्धि के साधनों को दे रहा है। ईश्वर यदि सर्वव्यापक न होता, तो वह सृष्टि के समस्त पदार्थों का अधिष्ठाता, आधार, क्रिया कर्म का साक्षी कैसे होता। एवं कर्मफल का दाता और नयायकारी कैसे बनता? सुखों के साधनों को किस प्रकार देता? अतः सिद्ध है वह सर्वव्यापक है।

इस विशाल सृष्टि की जितनी भी धन–धान्य, सोना, चांदी, समृद्धि सम्पत्ति आदि की सम्पदायें हैं, उनका आधार निराकार, सर्वव्यापक शिव = सुख का कारण, शंकर = सुखकारक ब्रह्म ईश्वर ही तो है। सम्पदा का क्षेत्र भी छोटा नहीं है, अति विस्तृत है। पृथिवी को देखते ही सरस, नीरस, नाना प्रकारक, अननुमानित सम्पदा का आगार दीखता है, अन्तरिक्ष पर दृष्टि डालते ही वायु, विद्युत एवं उत्पत्ति के आधार जल आदि का बृहत् भण्डार दृष्टिगोचर होता है, द्यौलोक में दृष्टि पड़ते ही प्रकाश दीप्ति के हेतु जाज्वल्यमान चांद, सितारे, सूर्य, चन्द्र आदि बड़े–बड़े प्रकाशपुंज दीख पड़ते हैं।

सर्वव्यापक ईश्वर प्रदत्त इस सम्पदा से पहाड़ों को चीरकर लोग पति, धनपति बन रहे हैं, वृक्षों को काट बेचकर नगरपति हो रहे हैं, जलों को बेचकर बड़े लखपति स्वामी कहे जा रहे हैं, फलों का लेन–देन कर कोठीपति सिद्ध हो रहे हैं, लोहा, कोयला आदि को प्राप्त कर करोड़पति बन रहे हैं, तेलों की खदानों से अरबपति, खरबपति बनते जा रहे हैं। यह सब निराकार शिव, शंकर सर्वव्यापक, सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान, अजर, अमर ईश्वर की सम्पदा का ही कमाल है।

सर्वव्यापक शिव ईश्वर द्वारा दी गई सम्पूर्ण सम्पदा सर्वजनीन है, सबके लिए है। किसी एक व्यक्ति, क्षेत्र ग्राम, प्रान्त, प्रदेश, देश के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए यह सम्पदा है।

सम्पदाओं के स्वामी ओमभिधान शिव, शंकर, ईश्वर की इस गरिमा, महिमा, उदारता, दयालुता को देख भक्ति भावों से नित्य सभी का मस्तक नम है। उन भक्ति भावों को व्यक्त करते हुए कोई भी थकता नहीं उन भक्तिभावों का सूचक मन्त्र है –

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च, नमः शंकराय च मयस्कराय च, नमः शिवाय च शिवतराय च।। (यजु. 16/41)

इस मन्त्र में 3 बार नमः शब्द आया है। नमः शब्द 2 प्रकार के हैं। जो णम प्रह्नत्वे शब्दे च धातु से असुन् एवं अच् प्रत्ययों द्वारा हलन्त, अजन्त क्रमशः नमस्, नमः शब्द रूप सिद्ध होते हैं। जिनके नमस्कार, सत्कार (नमस्यति परिचरणकर्मा, निघ. 3/5) वज्र, अन्न (नमः इति अन्न नाम, निघ. 2/7 नमः इति वज्र नाम, निघ. 2/20), संगति, स्तुति (यज्ञो वै नमः, शत ब्रा. 2/4/2/24) आदि अर्थ हैं। जिनका प्रकरणानुसार सम्बन्ध होता है। यहाँ प्रकृत मन्त्र में प्रसंगतः 'नमः' शब्द के स्तुति अर्थ की संगति होगी।

इस यजुः मन्त्र में स्तुति के अधिकारी ईश्वर के लिए चतुर्थी विभक्त्यन्त शम्भवाय, मयोभवाय, शंकराय, मयस्कराय, शिवाय, शिवतराय ये 6 पद आये हैं। इन 6 पदों के माध्यम से उपासक द्वारा सुख, कल्याण के निमित्त उपास्य ईश्वर के प्रति हृदय के गम्भीर भाव अभिव्यक्त हैं।

मन्त्र में आये ये चतुर्थ्यन्त पद शम्, मयस्, शिव इन शब्दों से निष्पन्न हुए हैं। ये तीनों शब्द शम् इति सुख नाम, मयः इति सुख नाम, शिवम् इति सुख नाम (निघ. 3/6) सुख के वाचक हैं। आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक इन 3 भेदों से सुख भी 3 प्रकार का है। शम् शब्द वाच्य सुख आध्यात्मिक = मोक्ष का सुख है, मयस् शब्द वाच्य सुख आधिदैविक = देव, इन्द्रिय अर्थात् मन, प्राण, 10 इन्द्रियों एवं आत्मा का सुख है। शिवशब्द वाच्य सुख आधिभौतिक = सांसारिक, धन–धान्य, रुपया पैसा, सगे सम्बन्धी आदि का सुख है।

शम् तथा मयस् उपपद रहते अन्तर्भावितण्यर्थ में भू सत्तायाम् धातु से अच् प्रत्यय द्वारा शम्भव, मयोभवाय शब्द सिद्ध होते हैं। जिनका चतुर्थी में शम्भवाय, मयोभवाय रूप बनता है। जिनका अर्थ होता है आध्यात्मिक, आधिदैविक सुख उत्पन्न करने वाले के लिए।

शम् तथा मयस् उपपद रहते डुकृञ्करणे धातु से अच् प्रत्यय द्वारा शंकर, मयस्कर शब्द निष्पन्न होते हैं। जिनका चतुर्थी में शंकराय, मयस्कराय प्रयोगरूप बनता है। जिनका अर्थ है आध्यात्मिक, आधिदैविक सुख करने वाले के लिए।

इसी प्रकार शिव शब्द से अतिशय अर्थ में तरप् प्रत्येक करके शिवतर शब्द बनता है, पुनः चतुर्थी में शिवतराय प्रयोग रूप बना है। जिसका अर्थ है – आध्यात्मिक = सांसारिक सुख के अतिशय कारण के लिए। प्रकृति सभी का कल्याण, सुख करती है, अतः शिव है। ईश्वर भी सबका कल्याण व सुख करता है, अतः वह शिवतर है। इस प्रकार नमः शम्भवाय इस मन्त्र का अर्थ हुआ।

हे ईश्वर! आप शम्भवाय = शम् आध्यात्मिक, मोक्ष सुख उत्पन्न करने वाले के लिए च = और मयोभवाय = आधिदैविक मन, इन्द्रियादि का सुख उत्पन्न करने वाले के लिए, नमः = स्तुति है, च = और, शंकराय शम् = मोक्ष सुख को करने वाले के लिए, नमः = स्तुति है, च = और, शिवाय = धन धान्य आदि मंगल सुख करने वाले के लिए, च = और, शिवतराय = अतिशय पूर्वोक्त मंगल, सुख स्वरूप के लिए, नमः = स्तुति है।

तात्पर्य हुआ उस अद्वितीय सत्ता के जैसे ओम्, ब्रह्म, ईश्वर आदि नाम हैं वैसे ही उसके शम्भव, मयोभव, शंकर, मयस्कर, शिव, शिवतर नाम हैं। वह ही मोक्ष आदि तीनों सुखों को उत्पन्न करता है व प्रदान करता है। सुखों की उत्पत्ति का वह ही करः कर्ता = करने वाला है। शिव भिन्न है, शंकर भिन्न है यह बुद्धिभेद अज्ञान मात्र है, सत्यज्ञान पूर्ण तथ्य नहीं। शिवभक्त किसी भ्रम में न रहें।

ओम पदवाच्य शिव, शंकर, ईश्वर के इसी विशाल स्वरूप को जानने के लिए शिवरात्रि पर्व की फाल्गुन कृष्ण चतुदर्शी की रात गुजरात प्रान्त टंकारा गांव के ज्ञानसूर्य महर्षि दयानन्द ने महत्त्वपूर्ण अध्यवसाय किया था। उस अध्यवसाय में उन्होंने शिवरात्रि पर्व पर व्रत क्या किया सत्य ही खोज निकाला। उस सत्य का प्रकाश महर्षि दयानन्द ने नमः शम्भवाय मन्त्र के अर्थों में निर्दिष्ट किया है।

नमः शम्भवाय च इस यजुः मन्त्र के अर्थ महर्षि दयानन्द ने यजुर्वेद भाष्यम्, आर्य्याभिविनयः, पंचमहायज्ञविधिः आदि स्थलों पर किये हैं। महर्षि ने उन अर्थों में सर्वत्र परमात्मा के शिव, शंकर स्वरूपों के वैविध्य का निर्देश करते हुए सुख, कल्याण के गम्भीर तत्त्वों का संकेत किया हैं

इन उपर्युक्त वेदमंत्र एवं महर्षि दयानन्द के मन्त्रार्थ से भली भांति परिज्ञात है कि शिव, शंकर पद भी एक अद्वितीय सर्वव्यापक ईश्वर के ही नाम हैं, भिन्न–भिन्न पदार्थों के नहीं। सर्वव्यापक, निराकार ब्रह्म आदि नाम स्वरूप वाला ईश्वर ही सबका उपास्य है। उसकी ही नित्य एवं शिवरात्रि पर्व पर उपासना की जाती है। वह ही शिव है, शिवतर है, शंकर है, शम्भव है, मयोभव है, मयस्कर है। महर्षि दयानन्द ने ईश्वर के शिव, शंकर आदि स्वरूपों को प्रतिपादित कर जहाँ अध्यात्म के गम्भीर रहस्य का प्रकाश किया है, वहीं शिवरित्र पर्व के परिप्रेक्ष्य में महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन दिया है कि शिवोपासक शिव, शंकर भिन्न हैं, इस भ्रमजाल को तोड़े।

पृष्ठ–2 का शेष

आर्य समाज का प्रचार–प्रसार कैसे हो?

तार्किक पक्के ज्ञान के आर्य समाजी बनें और अन्य धर्मियों को भी आर्य समाजी बना सकें। यह कार्यक्रम सहज, सरल, रोचक, मनोरजंक, ज्ञानवर्धक आदि होने चाहिए। डी ए वी विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में आर्य समाज के दस नियम एंव सत्यार्थ प्रकाश सम्मिलित होने चाहिए तथा इस पर परिचर्चायें, प्रतियोगितायें होनी चाहिए एंव चलचित्र बनने चाहिए जैसा अन्य सभी धर्मवाले अपने धर्म का टेलीविजन के कार्यक्रमों द्वारा, छोटी छोटी पुस्तिकाओं, दैनिक समाचार पत्रों में विभिन्न प्रकार के लेखों, पैम्पलेटों अदि द्वारा भी प्रचार प्रसार करते रहते हैं, वैसा ही आर्य समाजियों को भी करना चाहिए। इस विषय में आर्य समाज के समारोहों, बैठकों, पत्र पत्रिकाओं द्वारा अन्य आर्य समाजियों से भी सुझाव मागं कर, समुचित सुझावों को भी सम्मिलित कर प्रचार प्रसार करना चाहिए।

–ई–5 चंद्रा अपार्टमेंट, 115 कबीर मार्ग (निकट योजना भवन), लखनऊ (उत्तर प्रदेश) –226 001
सम्पर्क सूत्र :– 09451734531, 08860873963

आर्य समाज ग्राम तरैंची, वि. ख. बिजैली, जनपद–अलीगढ़ का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज ग्राम तरैंची, अलीगढ़ का चौथा वार्षिकोत्सव दिनांक 18 से 20 जून, 2016 को सभी ग्राम वासियों ने उत्साह पूर्वक मनाया। जिसमें आस–पड़ोस के ग्रामों की जनता ने भारी संख्या में भाग लेकर वैदिक धर्म में अपनी आस्था प्रदर्शित की।

इस पुनीत अवसर पर स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती ने अपने प्रभावशाली प्रवचन में कहा कि सभी मनुष्य सुख की इच्छा करते हैं और उसे पाने के लिए जगह–जगह मंदिरों में, बाबाओं के आश्रमों में, नदियों में मेलो में और पहाड़ों में घूमते–फिरते हैं, परन्तु सुख को न पाकर दुःख में वृद्धि हो जाती है। लेकिन जिसके पास सुख का भण्डार है उसे भूले रहते हैं। सुख किसी हाट–बाजार या दुकान में नहीं मिलता। इसे खरीदा भी नहीं जा सकता। यह मांगने पर नहीं मिलता। सुख कोई भौतिक वस्तु नहीं है जिसे कहीं से प्राप्त किया जा सके।

सुख की प्राप्ति के लिए हमें उस परम ब्रह्म परमात्मा के पास जाना होगा जिसने हमें यह शरीर दिया है और उसके पास जाने का एक ही मार्ग है, वह है अपने मन से समस्त विचारों व विकारों को हटाकर प्रातः सायं ईश्वर के मुख्य नाम ''ओ३म्'' का स्मरण करना या गायत्री मंत्र का जाप करना या वैदिक संध्या के मंत्रों का आन्तरिक मन में जाप करना। ऐसा करने से अहंकार का नाश होगा। बुद्धि पवित्र होगी। विचारों में पवित्रता आयेगी। दुःख, दुर्गुण, दुर्व्यसन दूर होकर कल्याणकारी गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ प्राप्त होंगे जिनसे शुभ कर्म करने पर ही सुख की प्राप्ति सम्भव है। किसी कवि ने कहा भी है –

दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे तो दुःख काहे को होय।।
देह धरे का कष्ट है सब काहूं को होय।
ज्ञानी भुगते ज्ञान कर मूर्ख भुगते रोय।।

परमात्मा प्रत्येक मनुष्य के हृदयाकाश में विद्यमान है। अतः उससे मिलने के लिए कहीं किसी के पास जाने की जरूरत नहीं है।

आचार्य जीवन सिंह, प्राचार्य श्री सवर्दानन्द संस्कृत महाविद्यालय साधु आश्रम, अलीगढ़ ने अपने भजनों और उपेदशों से जनता का आह्वान किया कि महर्षि दयानन्द के बताये वेद मार्ग पर चलने और आर्य समाज से जुड़ने पर ही कल्याणकारी सुख प्राप्त हो सकता है।

स्वामी चेतनदेव वैश्वानर, अधिष्ठाता कन्या गुरुकुल भैंया चामड़, इगलास, अलीगढ़ ने अपने व्याख्यान में स्त्री शिक्षा पर प्रकाश डाला और कहा कि स्त्री शिक्षा से ही मानव सुधार सम्भव है। मानव को उन्नतशील बनाने के लिए संस्कृत भाषा का ज्ञान आवश्यक है।

स्वामी उद्गीथानन्द, अधिष्ठाता गुरुकुल गंगीरी, अलीगढ़ ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

श्रीमती अलका आर्या, नोएडा और श्री ओम प्रकाश फ्रंटियर अलीगढ़ ने अपने भजनों और उपदेशों से वैदिक धर्म का ज्ञान कराया।

उत्सव के आयोजन में श्री गजराज सिंह, ओम प्रकाश सिंह, खूबीराम, गेंदालाल, नन्नूसिंह, यतेन्द्र सिंह, रमेशचन्द्र और देवेन्द्र सिंह का सहयोग सराहनीय रहा। वे सभी प्रशंसा के पात्र हैं।

– गजराज सिंह, प्रधान, आर्य समजा तरैंची, अलीगढ़

जन जागरण आर्य महासम्मेलन, नई टिहरी, उत्तराखण्ड में सम्पन्न

आर्य उपप्रतिनिधि सभा गढ़वाल ने आर्य समाज मंदिर, नई टिहरी, उत्तराखण्ड में जन जागरण आर्य महासम्मेलन का आयोजन 10 से 12 जून, 2016 को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न किया।

इस अवसर पर दानवीर श्री ठाकुर विक्रमसिंह जी, नई दिल्ली विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे और उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि आर्य समाज एक सामाजिक संस्था है अतः इसे मानव समाज के उत्थान हेतु सभी क्षेत्रों अर्थात् राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक क्षेत्रों में कार्य करने की आवश्यकता है। राजनीतिक प्रदूषण को आर्य समाज ही दूर कर सकता है।

वैदिक विरक्त मण्डल के संगठन मंत्री स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती जी ने अपने प्रवचन में वेद के प्रथम मंत्र 'अग्निमीडे पुरोहितम् ..... तथा आर्य समाज के प्रथम नियम ''सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या जाने जाते है।, उनका आदिमूल परमेश्वर है।'' की व्याख्या करते हुए कहा कि परमेश्वर ने मानव जाति के कल्याणार्थ पृथ्वी और अन्तरिक्ष में अनेक ठोस, द्रव व गैसीय पदार्थों की स्थापना की है जिनसे मनुष्य अपनी बुद्धि के बल पर विभिन्न उपयोगों व परीक्षणों से कल्याणकारी वस्तुएं और जीवनोपयोगी साधन व सुविधायें प्राप्त कर सकता है। परन्तु मानव समाज विभिन्न मानवीय प्रवृत्तियों वाले मनुष्यों से बना है। अतः मानव परमेश्वर द्वारा प्रदत्त पदार्थों और अन्तरिक्ष पर्यावरण का उपयोग उन्नति और अवनति दोनों के लिए करता है। फलस्वरूप समय–समय पर मानव समाज में परिवर्तन होते रहते हैं।

इन परिवर्तनों पर नियन्त्रण रखने हेतु परमेश्वर ने वेद में आज्ञा दी है कि विद्वानजन मानव समाज में व्याप्त अन्धकार, अज्ञान, असंगठन, अराजकता, अनैतिकता, आतंकवाद को नियंत्रित करने हेतु वेद ज्ञान का प्रचार–प्रसार पूर्ण निष्ठा के साथ सदैव करते रहें।

आर्य महासम्मेलन इसी दिशा में एक प्रभावी प्रयास था।

वेद में सभी सत्य विद्याओं जैसे, वेदोत्पत्ति, सृष्टि रचना, गणित, विमान विद्या, तार विद्या, समाज विज्ञान, मनोविज्ञान, भूगर्भ विज्ञान, अन्तरक्षि विज्ञान, भूगोल विज्ञान तथा समुद्र विज्ञान के मूल व्याख्यान रूपी ऋचायें उल्लिखित हैं। आवश्यकता वेदों पर अनुसंधान और अन्वेषण करने की है।

स्वामी जी के अतिरिक्त डॉ. वीरपाल, वेदालंकार, गाजियाबाद, स्वामी वेदानन्द सरस्वती जी–उत्तरकाशी, मनमोहन सिंह आर्य ने भी अपने विचार व्यक्त किये। श्री रूहेल सिंह जी व धर्मसिंह जी भजनोपदेशक ने अपने सारगर्भित भजनों और उपदेशों से सामाजिक कुरीतियों जैसे, भ्रूण हत्या, नारी उत्पीड़न, मूर्ति पूजा, नशाखोरी और युवा चरित्रहीनता पर प्रकाश डाला और इन बुराईयों को मानव कल्याण से मिटाने का आह्वान किया।

सम्मेलन का आयोजन और संयोजन पं. उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक देहरादून, उत्तराखण्ड के दिशा निर्देशन में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

– सुखदेव शास्त्री, प्रधान, आर्य उपप्रतिनिधि सभा, गढ़वाल

नैनीताल हाईकोर्ट एवं रजिस्ट्रार फर्म्स एण्ड सोसाइटीज देहरादून द्वारा दिये गये निर्णय के अनुरूप

श्री ओम प्रकाश आर्य की अध्यक्षता वाली आर्य विद्या सभा ने विभिन्न संस्थाओं का विधिवत कार्यभार संभाला

आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के सम्बन्ध में नैनीताल हाईकोर्ट एवं रजिस्ट्रार फर्म्स एण्ड सोसाइटी देहरादून द्वारा दिये गये निर्णय के आधार पर श्री ओम प्रकाश आर्य की अध्यक्षता में वर्ष 2005 से कार्यरत एवं वर्ष 2014–15 में रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत आर्य विद्यासभा ने सभा के आधीन संचालित संस्थाओं यथा (1) गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय, हरिद्वार, (2) कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून, (3) गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार, (4) डॉ. हरिराम आर्य इण्टर कॉलेज, मायापुर हरिद्वार, (5) ज्वालापुर इण्टर कॉलेज, ज्वालापुर, (6) गुरुकुल इण्टर साइंस कॉलेज, (7) पुण्य भूमि गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार का विधिवत चार्ज लेकर संचालन प्रारम्भ कर दिया है। उक्त संस्थाओं की व्यवस्था एवं प्रबन्ध के सम्बन्ध में विस्तार से विचार–विमर्श करने एवं आवश्यक निर्णय लेने हेतु आर्य विद्या सभा की कार्यकारिणी की बैठक 20 जून, 2016 को आहुत की गई तथा सभी संस्थाओं के प्राचार्य एवं प्रबन्धकों को संस्थाओं सम्बन्धी कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिये गये। यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि पिछले 10 वर्ष से आर्य विद्या सभा के नाम पर उपरोक्त संस्थाओं का संचालन जिन लोगों के हाथ में रहा, संस्थाओं की वर्तमान दयनीय एवं आर्थिक संकटग्रस्त स्थिति की जिम्मेवारी उनके ऊपर जाती है। उदाहरण के तौर पर कन्या गुरुकुल देहरादून की लगभग एक करोड़ रुपये से ज्यादा की देनदारी बकाया खड़ी है और संस्था आर्थिक संकट से जूझ रही है। इसी तरह गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी की स्थिति और भी अधिक चिन्ताजनक है। अतः आर्यजनों के समक्ष यह स्थिति स्पष्ट करना आवश्यक समझते हुए सामान्य संकेत इस सम्बन्ध में किया है। किन्तु हमें पूरा विश्वास है कि आर्य विद्या सभा बहुत शीघ्र उपरोक्त सभी संस्थाओं को अपनी कर्त्तव्यपरायणता एवं कर्मठता के द्वारा संकट से निकालकर प्रगति पथ पर लाने में सफल होगी। आर्य विद्या सभा के सम्बन्ध में दिये गये नैनीताल हाईकोर्ट एवं रजिस्ट्रार फर्म्स सोसाइटीज के निर्णय आवश्यकता पड़ने पर आर्यजनों की जानकारी के लिए भविष्य में प्रकाशित कर दिये जायेंगे। यहाँ पर इतना ही जान लेना आवश्यक है कि आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार द्वारा संचालित उपरोक्त संस्थाओं से श्री ओम प्रकाश आर्य की अध्यक्षता वाली आर्य विद्या सभा के अतिरिक्त किसी अन्य सभा या व्यक्ति का कोई सम्बन्ध अथवा हस्तक्षेप नहीं है।

– मुध्याधिष्ठाता, गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

आर्य समाज राजनगर, गाजियाबाद का चुनाव सम्पन्न

श्री हरशरण त्यागी – प्रधान
श्री सत्यवीर चौधरी – मंत्री
श्री शशिबल गुप्ता – कोषाध्यक्ष

आर्य समाज अमर कालोनी दिल्ली का चुनाव सम्पन्न

श्री जितेन्द्र कुमार डावर – प्रधान
श्री ओम प्रकाश छावड़ा – मंत्री
श्री सुभाषचन्द्र आर्य – कोषाध्यक्ष

8 POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 8–9 जुलाई, 2016
प्रकाशन की तिथि : 7 जुलाई, 2016
वैदिक सार्वदेशिक
7 से 13 जुलाई, 2016
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

शुभ संकल्प ही आएँ

**आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु वि वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सनदिम वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे।।**

—ऋ० १/८६/१ ; यजुः० २५/१४

ऋषिः—गोतमो राहूगणो पुत्रः।। देवता—वि वेदेवाः।। छन्दः—निच ज्जगती।।

"मनुष्य क्रतुमय (संकल्पमय) है, अतः मनुष्य को क्रतु अर्थात् संकल्प व अध्यवसाय करना चाहिए", परन्तु यह संकल्प हम किस प्रकार से करें?

पहले तो हमारे क्रतु (संकल्प) 'भद्राः' होने चाहिएँ। हम श्रेष्ठ संकल्प ही करें कल्याणकारी संकल्प ही करें। जो अभद्र संकल्प हैं उन्हें देवता स्वीकृत नहीं करते, अतएव उनसे कुछ बनता नहीं। इसलिए हमारा यह आग्रह है कि हमारे पास शुभ संकल्प ही आवें जिससे देवता अर्थात् संसार को चलाने वाली ई वरीय शक्तियाँ हमें उन्नत करती रहें, परन्तु संकल्पों के केवल शुभ होने से ही काम नहीं चलेगा, ये हमारे शुभ संकल्प बलवान् भी होने चाहिएँ। ये 'अदब्ध' हों, किसी विरोधी शक्ति से दबने वाले न हों और फिर ये संकल्प उद्भेदन करने वाले हों, अर्थात् मार्ग की सब विघ्न–बाधाओं का उद्भेदन करते हुए, सब गुत्थियों को सुलझाते हुए और सब बन्द किवाड़ों को खोलते हुए सफलता तक पहुँचाने वाले हों। हमारे शुभ संकल्पों में ऐसा बल भी चाहिए और ये संकल्प (परीत) पहले से घिरे हुए भी, अर्थात् किसी बड़ी अच्छाई के विरोधी भी नहीं होने चाहिएँ, हमारे संकल्प किसी भी महान् सिद्धान्त में हस्तक्षेप करने वाले भी नहीं होने चाहिएँ। यदि ऐसा होगा, तो भी हमारे संकल्प जगत् के देवों द्वारा प्रतिहत हो जाएँगे, मारे जाएँगे। इसलिए आज से हम में शुभ और ऐसे बलवान् संकल्प ही आवें जिससे कि (इन संकल्पों के ईश्वरीय नियमों के अनुकूल होने के कारण) देवता हमारी सदा उन्नति कराते जाएँ और दिन–रा अप्रमाद होकर हमारे रक्षक बने रहें। प्रभु के ये देव तो हमारी, उन्नति के लिए ही हैं और निरन्तर बिना भूल–चूक के हमारी रक्षा करने को तैयार हैं, पर हम भी बड़े–बड़े अभद्र संकल्प करके या यूँ ही निर्बल–से बहुत–से संकल्प करके ऐसी स्थिति उत्पन्न कर देते हैं कि इन देवों की बड़ी भारी सहायता पाने से अपने–आपको वंचित कर लेते हैं। इसलिए आज से केवल भद्र नि चय ही हम में आवें तथा न दबने वाले, उद्भेदन करते हुए चले जाने वाले और अपरीत, महान् भद्र नि चय ही हम में आवें और चारों ओर से आवें, जिससे कि हम जगत् शासक के देवताओं की अनुकूलता में ही सदा बढ़ते हुए जीवन मार्ग पर चलते जाएँ।

शब्दार्थ—नः भद्राः क्रतवः वि वतः आयन्तु=हमारे पास श्रेष्ठ ही संकल्प सब ओर से आएँ। **अदब्धासः**=जो कभी न दबने वाले हों **अपरीतासः**=जो किसी से घिरे हुए न हों **उद्भिदः**=और जो उद्भेदन करने वाले हों **यथा देवाः न सदमिद् वृधे असन्**=जिससे कि देवता हमारे लिए सदा उन्नति के लिए होवें **दिवे दिवे अप्रायुवो रक्षितार च असन्**=और प्रतिदिन प्रमाद रहित होकर हमारे रक्षक होवें।

साभार- 'वैदिक विनय'से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :—

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

शुभ सूचना ओ३म् शुभ सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित
अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ

सत्यार्थ प्रकाश

लागत मूल्य 80/– रुपये

100 प्रति लेने पर मात्र 40 रुपये में दिया जायेगा

भारी छूट पर उपलब्ध

10 से अधिक प्रति लेने पर 50 रुपये में दिया जायेगा

23 गुणा 36 के 16वें साईज तथा पेपर वैक जिल्द में आकर्षक टाइटल के साथ बढ़िया कागज पर प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश उपलब्ध

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।